ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 45 बुलेटिन अवधिः 09–13 जून, 2018 दिन षुक्रवार| दिनाँकः 08 जून, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल**				
	09/06/2018	**10/06/2018**	**11/06/2018**	**12/06/2018**	**13/06/2018**
वर्षा (मिमी0)	60	30	10	8	5
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	22	22	23	23	24
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	13	12	12	13
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	90	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	50	45	45	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	008	006	004	006
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (01– 07 जून 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक बादल एवं मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा में अधिकतम तापमान 22.0 से 25.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 13.0 से 15.0 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- धान की रोपाई हेतु नर्सरी के लिए खेत की मेढ़ बन्दी करें।
- जून के प्रथम सप्ताह तक नर्सरी अवश्य डाल लें।
- नर्सरी हेतु धान के शुद्ध बीज का प्रयोग करें।
- कीड़े–मकोड़े हेतु फसल सुरक्षा की व्यवस्था करे।
- बसन्त ऋतु में यदि गन्ने में चौडी पत्तियो वाले खरपतवार की बहुलता हो तो 2,4 डी0 सोडियम साल्ट का 0.75 से

1किग्रा0 सक्रिय घटक प्रति हेक्टेयर की दर से 750 ली0 पानी में घोल बनाकर 1 हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़काव करे। यदि कृषि श्रमिक उपलब्ध हो तो गन्ने के खेत में गुड़ाई कर एक हफ्ते तक छोड़कर तत्पश्चात सिंचाई करे। पर्याप्त नमी होने पर नाइट्रोजन का यूरिया के रूप में छिड़काव करे।

- लोबिया व फ्रासबीन मे पौधे सूखने की स्थिति मे, कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/ली0 पानी की दर से प्रयोग करे।

उद्यानप्रबन्धः

- पौधशाला में मूलवृन्त से निकली शाखाओं को तोड़ना व निकालना जारी रखें।
- गुठलीदार फलों में गमोसिस रोग के नियंत्रण के लिए स्ट्रैप्टोसाईकलिन 0.01/या कापर आक्सीक्लोराइड 0.025 प्रतिशत का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।
- मध्यम ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में सेब के फलों को सड़ने से रोकने के लिए प्लेनोफिक्स नामक दवा का 10 पीपीएम छिड़काव करें
- आड़ू, प्लम, खुमानी की अगेती किस्मों की तुड़ाई जारी रखें। गुठलीदार फलों को मण्डी भेजे।
- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रो में फूलो के पॅखुड़ियो के झड़ने की अवस्था पर स्कैब रोग नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम 0.05 प्रतिशत का प्रयोग करे।
- घाटी क्षेत्रो मे, राई, मूली, शलजम, फूलगोभी जैसी बीजू फसलों में यदि बीज पकने की अवस्था हो तो सिंचाई रोक दें एवं जैसे ही फसल पक जाये कटाई कर दें।
- टमाटर मे पत्तियो पर धब्बा एवं फल सड़न रोग के रोकथाम हेतु मैन्कोजेब 2.5 ग्राम/ली पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- मध्यम व उँचे पर्वतीय क्षेत्रो मे पॉलीहाउस मे शिमलामिर्च, बैगन की पौध का रोपण करें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- प्याज मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल या डिफिनोकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल का 500 मिली0 प्रति है0 की दर से किसी सर्वांगी कीटनाशी एवं स्टीकर के साथ मिलाकर छिड़काव करे।
- मिर्च व टमाटर की फसल मे विषाणु जनित रोगो के नियत्रंण हेतु संक्रमित पौधो को निकालकर नष्ट कर दें।
- टमाटर व मिर्च की फसल मे सिकुड़े हुए चित्तकबरे पत्ते दिखाई देने पर ग्रसित पौधो को निकालकर नष्ट करे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण हेतु सर्वागीं कीटनाशी का छिड़काव करें। पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
- मध्यम एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आड़ू के पर्णकुंचन रोग की रोक–थाम के लिए कीटनाशक रसायनों का द्वितीय छिड़काव करें।

पशुपालनप्रबन्धः

- नाइट्रेट विषाक्तता होने पर पशु की श्वसन एवं नाड़ी दर बढ़ जाती है एवं सांस लेने में कठिनाई, मॉसपेशियों में ऐंठन व कमजोरी आ जाती है। इससे बचाव हेतु मेथिलीन ब्लू के 1 प्रतिशत विलयन की 50–100 मि0ली0 मात्रा सीधे ही नस में देना चाहिए।
- सायनाइड ग्रस्त चारा खाए हुए पशु को पानी नही पिलाना चाहिए तथा चारागाहो में चराने ले गये पशुओ को कम बढ़ी हुई ज्वार, बाजरा, चरी की फसल न खाने दे।
- छोटे मुर्झाये हुए पीले व सुखकर ऐठे हुए पौधो को चारे के रूप में उपयोग नही करे।
- गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियो में मेलाथियॅान अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयो का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नही कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायो का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियो से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतू शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।
- अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।
- पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।

❖

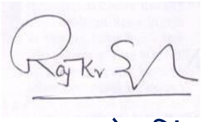

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर